



B.A. Part I / Paper - I / Lecture no - 8.

Dr. Sanita Kumar
Assistant Professor
Marwari College Darbhanga.

Topic - 3 सामाजीकरण

जब एक बच्चा जन्म लेता है तो वह एक आश्रितिक होता जाता है। वह न तो वह स्वयं के बारे में जानता है और न ही समाज के बारे में। घर में समाज में उसे किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए यह सब सर्वप्रथम उसकी माँ, घर के सदस्यों, रिश्तेदारों, मित्रों से धीरे-धीरे सीखने की शुरुआत हो जाती है। वह इन्हें ही सामाजीकरण करते हैं।

प्रांसन के रॉल परिभाषित करते हुए कहते हैं "सामाजीकरण सीखने की प्रक्रिया है जो सीखने वाले को सामाजीक अनुभवों को निगमन योग्य बनाती है।" कि बात सच है - "सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजीक और सांस्कृतिक क्षेत्र में स्वेच्छा करता है, समाज के विभिन्न समूहों का सदस्य बनता है, अपनी प्रक्रिया के माध्यम से उसे समाज के अर्थों

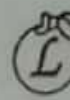
इसमें आकर्षण और स्वीकारण की प्रक्रिया शामिल है।

समाजीकरण की प्रक्रिया / स्तर Process of stages of socialization

1) भौतिक अवस्था (oral stage) - यह प्रथम स्तर है। इस स्तर पर बच्चा अपनी माँ के अंगुली किनी और मँ-मँ नहीं करता। इस अवस्था बच्चे की उम्र 1 से 1½ वर्ष तक होती है। इस उम्र में बच्चा अपने मुख की मदद से सिकर अपनी माँ के स्तनपान करवा करता है।

2) सैक्रल अवस्था (anal stage) - यह अवस्था उम्र 1½ वर्ष से शुरू होकर तीन-चार वर्ष की आयु तक चलती है। इस अवस्था में बच्चे की यह प्रक्रिया जाता है कि उसे मल और रक्त को जमा करना चाहिए तथा इसे सोफा करना, कपड़े आदि न करना चाहिए प्रेरित किया जाता है। सही बात में उसे मल प्रेरित किया जाता है। जब बच्चा बाली करता है तब उसे डोर पकड़नी है और सही कार्य करने पर प्रोत्साहित या लोहा दिया जाता है।

3) वादात्मिकता की अवस्था (Identification stage) - यह अवस्था 4 वर्ष की आयु से शुरू होकर 12-13 वर्ष की



आयु तक चलती है। इस अवस्था में बच्चे की यह अवस्था की जाती है कि वह निर्यात के अनुसार जीवन को जीने तथा पारिवारिक नियमों के अनुसार चले। इस अवस्था में बच्चे को शायद अनुकूलित करने हुए बालक से अहंता, लज्जा, ईर्ष्या, विरोध आदि भावनाओं का विकास होता है।

ब) किशोरावस्था (Adolescence Stage) -
कैल अवस्था में 13-19 वर्ष की उम्र होती है। बच्चे के शरीर में कुछ कार्यात्मक परिवर्तन उपर हो चुके हैं। बच्चे इस अवस्था में अपने परिवार के सदस्यों के साथ घड़ी, लड़क, विरोध आदि के संघर्ष में जीने लगता है। बच्चों में यौन संबंध आचारों और विकसित होने लगती है। इस अवस्था में बच्चों में विफलता विकसित की व्यक्त करने का दौरा आदि का प्रतीक्षण दिया जाता है।

3) वयस्क अवस्था (Adulthood) - इस अवस्था में व्यक्ति का सामाजिक, आर्थिक परीक्षण होती है। बच्चे लगता है। विवाद के कारण व्यक्ति की दायित्व बढ़ती है। एवं सामाजिक दायित्व बढ़ जाता है। इस अवस्था में

व्यक्ति को पिता, पुत्र, पत्नी, मित्र आदि कार्य-
क्रमों में शामिल करने से अपनी शक्ति
बढ़ाने का प्रयत्न है।

- 6) बृद्धावस्था (old Age) - इस अवस्था में
शारीरिक एवं मानसिक क्षीयता के
कारण सामाजिक कार्य में बहुत कम योगदान
करता है। अतः उसे पिता का समर्थन
अथवा देना पड़ता है। परिवार में नाना या नानी
दादा या दादी आदि की स्थिति इस प्रकार है।

Sybil K. K.

17/4/20.